परिशिष्ट 1

अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

क्या परमेश्वर का अस्तित्व है?

(अध्याय 1 के लिए प्रश्न पृष्ठ 11 पर दिये गये हैं)

1. सबसे विचारनीय प्रश्न जो कोई पूछ सकता है, वह यह है कि "क्या परमेश्वर का अस्तित्व है?"
2. प्रश्न "क्या परमेश्वर का अस्तित्व है?" विचारनीय है क्योंकि इस प्रश्न का उत्तर हम कैसे देते हैं वह जीवन के बारे में हमारे अन्य सभी प्रश्नों को प्रभावित करेगा।
3. बाइबल परमेश्वर के बारे में पुष्टि के साथ आरम्भ होती है।
4. पहला प्रमाण जो हमें परमेश्वर में विश्वास करने के लिए विवश करता है, वह संसार का प्रमाण है। सृष्टि भावपूर्ण ढंग से परमेश्वर के अस्तित्व की घोषणा करती है।
5. यदि मनुष्य के अस्तित्व में परमेश्वर की विशेषता का लक्षण नहीं है, तो हम (1) जीवन के स्रोत, (2) प्रकृति के नियम के अस्तित्व, और (3) परिवार के अस्तित्व की व्याख्या नहीं कर सकते।

बाइबल परमेश्वर का वचन

(अध्याय 2 के लिए प्रश्न पृष्ठ 23 पर दिये गये हैं)

1. यूनानी वाक्यांश का अनुवाद "परमेश्वर की प्रेरणा" का मूल अर्थ "परमेश्वर के सांस से" है। उत्तेजना भरे सांसारिक लेखकों को "प्रेरणा" से लिखने वाले कहा जाता है, परन्तु बाइबल दावा करती है कि इसकी प्रेरणा का स्रोत स्वयं परमेश्वर है।

2. बाइबल को नष्ट करने के अपने प्रयास में डियोकलिशियन असफल रहा। वास्तव में, एक सौ वर्षों के बाद, जब एक और रोमी सम्राट ने यह घोषणा की कि वह नये नियम को फिर से तैयार करना चाहता है, तो चौबीस घन्टों के भीतर उसे इसकी पचास प्रतियां प्रस्तुत की गईं।
3. उस समय लिखी गईं जब स्वास्थ्य विज्ञान अथवा सेहत से सञ्बन्धित बातों के विषय में मनुष्य कुछ भी नहीं जानता था, मूसा की पुस्तकें आधुनिक धारणाओं को दिखाती हैं। यद्यपि वैज्ञानिकों द्वारा जीवाणुओं की खोज के तीन हज़ार वर्ष पूर्व लिखी गई, लैव्यव्यवस्था 13:45 बीमारी को फैलने से रोकने में सहायता के लिए निर्देश देती है।
4. जबकि बाइबल साहित्य के ज्ञात हर एक विषय को शामिल करती है और चालीस से अधिक लेखकों द्वारा दो हज़ार वर्षों से अधिक के समय में लिखी गई, यह सञ्पूर्ण एकता का प्रदर्शन करती है।
5. बाइबल का विषय एक मनुष्य– अर्थात यीशु मसीह की कहानी है।
6. बाइबल ने मानवता को किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक प्रभावित किया है। इसने इतिहास के बहाव को बदल दिया, साम्राज्यों को स्थापित किया, और जिन्होंने इसके उपदेशों की आज्ञा मानी उन्हें आशिषें और सफलता दी है।
7. बाइबल पाठक को उसके अपने अनन्तकाल के लिए आशा और भरोसा देती है, और जब कोई प्रियजन छिन जाता है तो यह उसके लिए सांत्वना लाती है।
8. परमेश्वर के वचन के अजूबों में इसकी पुरातनता, इसकी आधुनिकता, इसकी विविधता, इसकी एकता, इसका विषय, इसका प्रभाव, और इसकी सांत्वना सञ्मिलित हैं।

परमेश्वर पिता कौन है?

(अध्याय 3 के लिए प्रश्न पृष्ठ 38 पर दिये गये हैं)

1. केवल एक ही सच्चा और जीवता परमेश्वर है। उसने संसार को बनाया और केवल वही अनन्त, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, और सब जगह विद्यमान है।
2. पुराने नियम की परमेश्वरत्व की धारणा उत्पत्ति 1:26, उत्पत्ति 3:22, उत्पत्ति 11:7, और यशायाह 6:8 में देखी जाती है।

3. यीशु का बपतिस्मा, मनुष्य के छुटकारे का काम, प्रार्थना और प्रभु की आज्ञा का बपतिस्मा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के मिलकर काम करने के उदाहरणों को दिखाते हैं।
4. मनुष्य के लिए परमश्‍वर के पास आने का एकमात्र मार्ग यीशु मसीह के द्वारा आना ही है। केवल वही परमेश्‍वर और मनुष्य के बीच प्रामाणिक मध्यस्थ है।
5. यूहन्ना 14:6 और 1 तीमुथियुस 2:5 सिखाते हैं कि परमेश्‍वर के पास दूतों, संतों, या अन्य लोगों (जीवित अथवा मृत) के द्वारा नहीं पहुंचा जा सकता। पिता तक जाने के लिए मार्ग केवल यीशु मसीह ही है।
6. यीशु को मनुष्यजाति के साथ उसके सम्बन्ध को प्रतिबिम्बित करने के लिए ''मनुष्य का पुत्र'' कहा जाता है; और परमेश्‍वर के साथ उसके सम्बन्ध में, उसे ''परमेश्‍वर का पुत्र'' कहा जाता है।
7. परमेश्‍वर के बारे में बाइबल में बताये गये कुछ तथ्य ये हैं: (1) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अस्तित्व में हैं। (2) इन तीनों से एक महिमामय परमेश्‍वरत्व बनता है। (3) वे इकट्ठे हैं और एक होकर अस्तित्व में हैं। (4) वे अनन्त विलक्षण और सभी रची हुई वस्तुओं से भिन्न हैं। (5) वे इच्छा और उद्देश्य में एक हैं।
8. ये सच्चाइयां इस तथ्य पर टिकी हुई हैं कि परमेश्‍वर ने सब वस्तुओं की रचना की: (1) सभी वास्तविकताओं के पीछे वही है। (2) वह अनन्त है। (3) वह सर्वशक्तिमान है। (4) वह सब कुछ जानता है। (5) वह सब जगह विद्यमान है। (6) केवल वही सच्चा और जीवता परमेश्‍वर है।
9. हमें कुलुस्सियों 1:16, 17 में बताया गया है कि सब वस्तुओं को इकट्ठा रखकर, परमेश्‍वर संसार में निरन्तर काम करता है। तर्क और निरीक्षण से भी पता चलता है कि एक सर्वशक्तिमान हाथ पृथ्वी को प्राकृतिक नियमों से सम्भाले रखता है। वह पृथ्वी और इसके लोगों को लगातार वायु, पानी, और सूर्य का प्रकाश देता है।
10. यीशु मसीह के द्वारा परमेश्‍वर का सच्चा न्याय व्यक्तिगत, स्पष्ट, और विश्‍वव्यापी होगा।

यीशु, परमेश्वर का पुत्र

(अध्याय 4 के लिए प्रश्न पृष्ठ 46 पर दिये गये हैं)

1. मसीहियत का आधार यह सच्चाई है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
2. यीशु के जन्म की भविष्यवाणी की गई थी जिसमें उसकी वंशावली की कुछ स्पष्ट बातें शामिल हैं। उसके जन्म स्थान और ढंग की भविष्यवाणी की गई थी। भविष्यवक्ताओं ने उसके मिस्र में जाने और उसके जन्म के समय कत्लेआम की पूर्व सूचना दी थी। भविष्यवाणियों ने गलील में उसके जीवन, यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश, उसके अग्रदूत, और उसके कामों के बारे में बताया। उसकी सेवकाई, दृष्टातों में उसकी शिक्षा, अन्यजातियों के बीच उसका विशेष कार्य, और यहूदी हाकिमों के द्वारा उसके ठुकराए जाने की सभी भविष्यवाणियां की गईं। ज़विष्यवाणी में यीशु के पकड़वाये जाने और मृत्यु को विस्तार से चित्रित किया गया है। मृत्यु के समय उसके शब्दों को, उसके गाड़े जाने, जी उठने और ऊपर उठाए जाने की सूचना के साथ पहले ही दर्ज कर दिया गया। (देखिए पृष्ठ 42 और 43)।
3. यीशु के जीवन से सज्बन्धित भविष्यवाणियों का पूरा होना दिखाता है कि यीशु ईश्वरीय था और जिन लोगों ने बाइबल को लिखा, उन्हें पवित्र आत्मा की प्रेरणा थी।
4. यीशु ने इब्राहीम से पहले होने का दावा किया और कहा कि संसार के आरज़्भ से पहले भी वह परमेश्वर के साथ था। उसने बताया कि वह स्वर्ग से आया और पृथ्वी पर उसके पास सारा अधिकार है।
5. यीशु ने कहा कि वह जगत की ज्योति है; फिर उसने अन्धों को देखने योग्य बनाया। उसने अपने आप को जीवन की रोटी कहा, और उसने पांच हज़ार को खिलाया। उसने पुनरुत्थान और जीवन होने का दावा किया, और लाज़र को मुर्दों में से जिलाया।
6. यीशु की भलाई को पीलातुस की पत्नी के द्वारा, हेरोदेस के द्वारा, क्रूस पर डाकू के द्वारा, और यहां तक कि यहूदा के द्वारा पहचाना गया।
7. प्रभु का दिन, प्रभु भोज, बपतिस्मा, और हमारे कैलेण्डरों का तिथि निर्धारण हमारे आज के संसार पर यीशु के प्रभाव का प्रमाण हैं।

पवित्र आत्मा कौन है ?

(अध्याय 5 के लिए प्रश्न पृष्ठ 55 पर दिये गये हैं)

1. प्रश्न "क्या ?" के बजाय "कौन ?" है क्योंकि पवित्र आत्मा एक जीव है, एक ईश्वरीय व्यक्ति है जिसका अपना व्यक्तित्व है।
2. पवित्र आत्मा न्याय, मन, इच्छा, ज्ञान, और भावनाओं को दिखाता है जो यह प्रदर्शित करता है कि वह केवल एक बल नहीं एक जीवित व्यक्ति है।
3. सामान्यत: शक्तियों या बलों के साथ दुर्व्यवहार को कविता अथवा प्रतीकात्मक संदर्भ को छोड़ "दुखी हुआ," "अपमानित हुआ," या "शोकित हुआ" जैसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जाता। इन पदों के संदर्भ से पता नहीं चलता कि भाषा कविता की है अथवा प्रतीकात्मक। यदि कोई पवित्र आत्मा को "दुखी" या "अपमानित" कर सकता है, तो फिर अवश्य ही वह एक व्यक्ति है।
4. पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र के साथ अनन्त होने के गुणों में भागीदार होता है, सब कुछ जानता है, सबसे शक्तिशाली है, और हर जगह विद्यमान है। पिता और पुत्र की तरह आत्मा के पास भी सृजनात्मक शाक्ति है।

परमेश्वर मनुष्य बना

(अध्याय 6 के लिए प्रश्न पृष्ठ 63 पर दिये गये हैं)

1. नये नियम की पहली चार पुस्तकों अर्थात सुसमाचार में प्रकट है कि परमेश्वर, मनुष्य कैसे बना।
2. जन्म, यीशु का आरम्भ नहीं था। वह संसार के अस्तित्व से पहले पिता की महिमा में भागीदार था।
3. यूहन्ना 1:1-5 ये चार सच्चाइयां सिखाता हैं: (1) यीशु सृष्टि नहीं था। (2) परमेश्वर ने संसार की रचना यीशु के द्वारा की। (3) यीशु जीवितों को जीवन देता है। (4) यीशु जीवन और मृत्यु का प्रभु है।
4. यीशु (1) स्वर्ग को छोड़कर, (2) मनुष्य बनकर, (3) मनुष्यों की सेवा करके, और (4) मृत्यु तक समर्पण के लिए नीचे आया।
5. यह तथ्य कि परमेश्वर-मनुष्य बना, मसीहियत का केन्द्रीय सच है।
6. यीशु का जन्म विलक्षण था क्योंकि वह एक कुंवारी से पैदा हुआ था।
7. हमें कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि यीशु (1) परमेश्वर था और है,

(2) मनुष्य बना, और (3) परमेश्वर मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर रहा।

8. यीशु परमेश्वर था: क्योंकि उसका मनुष्य बनना एक मनुष्य के चींटी बनने से कहीं बढ़कर नीचा होना था।

यीशु को हम कैसे दे ोंगे?

(अध्याय 7 के लिए प्रश्न पृष्ठ 74 पर दिये गये हैं)

1. ''उद्धारकर्ता'' शब्द उसके लिए प्रयुक्त होता है जो दूसरों को अत्यधिक खतरे से बचाता है।
2. यीशु एक विलक्षण उद्धारकर्त्ता है। क्योंकि वह हमें हमारे पापों से बचाता है। वह आत्मिक उद्धारकर्त्ता है।
3. ''ख्रिस्तुस'' का अर्थ है ''परमेश्वर का अभिषिक्त अथवा चुना हुआ।''
4. हम जानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है क्योंकि यीशु के बपतिस्मे के समय परमेश्वर ने उसके अपना पुत्र होने की घोषणा की। यूहन्ना प्रेरित ने कहा कि हमें तीन गवाहियां दी गई हैं: आत्मा, जल, और लहू की।
5. पवित्र आत्मा, जल, और लहू की बात करते हुए, प्रेरित यीशु के जीवन की घटनाओं की ओर संकेत कर रहा था। जब उसने जल में बपतिस्मा लिया था तो पवित्र आत्मा उस पर उतरा, और लहू उसकी मृत्यु के इर्द-गिर्द की घटनाओं की ओर संकेत करता है।
6. पतरस ने अपने सुनने वालों को, यीशु को प्रभु और मसीह के रूप में स्वीकार करने की चुनौती दी (प्रेरितों 2:36)।
7. यदि यीशु प्रभु है (और वह *है भी*), तो फिर हमें उसकी शिक्षा के आगे समर्पण कर देना और अपने जीवनों में उसे प्रथम स्थान देना चाहिए।

यीशु पृथ्वी पर क्यों आया?

(अध्याय 8 के लिए प्रश्न पृष्ठ 84 पर दिये गये हैं)

1. पृथ्वी पर प्रभु का आना मानवीय इतिहास की सबसे बड़ी घटना थी। हमारा उद्धार उसके क्रूस पर मरने के लिए आने पर निर्भर था।
2. यीशु सम्पूर्ण मनुष्य और सम्पूर्ण परमेश्वर था।

3. यीशु पूरी तरह से ईश्वरीय और पूरी तरह से मनुष्य था।
4. हमारा प्रभु अपनी सेवकाई, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा लोगों को बुलाने के लिए आया, जिन्हें उसने अपनी कलीसिया कह कर पुकारना था।
5. यीशु ने बारह प्रेरितों को चुना और उन्हें व्यक्तिगत तौर पर शिक्षा दी, परन्तु यह स्पष्ट है कि वह उन्हें उस काम के लिए शिक्षित कर रहा था जो उसके जाने के बाद उन्हें करना था (यूहन्ना 14:19)।
6. पत्रियां हमें दिखाती हैं कि उसकी आत्मिक देह बनकर मसीह के जीवन का उत्तर कैसे देना है।
7. नहीं, उसकी कलीसिया बने बिना हम यीशु के जीवन का सही उत्तर नहीं दे सकते।
8. उसकी कलीसिया बनकर जीने के बिना हम इस संसार में यीशु के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते।

क्रूस और कलीसिया

(अध्याय 9 के लिए प्रश्न पृष्ठ 95 पर दिये गये हैं)

1. बाइबल की कहानी का सार परमेश्वर के पुत्र के जीवन का बलिदान है, जो उसने मनुष्यों के लिए क्रूस पर दिया।
2. मसीहियत का आधार पाप के लिए एक ईश्वरीय बलिदान का दिया जाना और उस बलिदान का मृतकों में से जी उठना है।
3. कलीसिया रहित मसीहियत का अस्तित्व नहीं हो सकता; क्योंकि कोई सिर देह के बिना काम नहीं कर सकता, न ही कोई देह सिर के बिना काम कर सकती है।
4. क्रूस (1) कलीसिया की रचना करती है, (2) कलीसिया को शुद्ध करती है, (3) कलीसिया को विवश, अथवा क्रियाशील करती है।
5. मसीह की देह में विश्वास (रोमियों 10:10), पाप से मन फिराने (प्रेरितों 11:18), मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में अंगीकार करने (रोमियों 10:10), और मसीह में बपतिस्मा लेने (गलतियों 3:27) के द्वारा प्रवेश किया जाता है।
6. यीशु हमें क्षमा और जीवन पाने का निमन्त्रण देता है।

7. यीशु की देह कलीसिया है।

''कलीसिया'' क्या है?

(अध्याय 10 के लिए प्रश्न पृष्ठ 104 पर दिये गये हैं)

1. पवित्र आत्मा के द्वारा प्रयुक्त शब्दों को समझना निर्णायक है। यीशु और प्रेरितों के द्वारा प्रयोग किये शब्द अर्थों, उदाहरणों और विचार रूपों को देखने के लिए हमें बाइबल अध्ययन का इच्छुक होना आवश्यक है। (देख़िए पृष्ठ 97 से 103 और पृष्ठ 253 पर परिशिष्ट 3)।
2. ''कलीसिया'' शब्द उन लोगों की देह की ओर संकेत करता है जिन्होंने मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मान ली है और जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा छुटकारा दिलाया गया है। यह देह एक स्थान में मसीहियों की स्थानीय सभा के रूप में ''कलीसिया'' है और इसे समस्त संसार में छुड़ाए हुए सज़ी लोगों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
3. यह तथ्य कि कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है, का अर्थ है कि परमेश्वर अपने लोगों में वास करता है। इस कारण, हमें इस प्रकार जीना, काम करना और आराधना करनी चाहिए जिससे पता चले कि परमेश्वर हमारे भीतर वास करता है।
4. मसीही लोग एक ''जीवित'' भवन, अर्थात कलीसिया बनते हैं। हर एक मसीही को लगातार विकास करते रहना चाहिए।
5. मसीह कलीसिया का सिर बिल्कुल वैसे ही है जैसे पति पत्नी का। मसीह कलीसिया से प्रेम रखता है जैसे पति अपनी पत्नी से प्रेम रखता है।
6. कोई मसीह की कलीसिया में विश्वास करने, मन फिराने, अंगीकार करने, और बपतिस्मा लेने के द्वारा प्रवेश करता है। उद्धार द्वारा हर एक व्यक्ति को अपनी कलीसिया में परमेश्वर मिलाता है, मनुष्य नहीं।
7. कलीसिया मसीह का नाम पहनती है, उसकी आराधना के लिए इकट्ठी होती है, और संसार में उसका काम करती है। मसीह का पवित्र आत्मा मसीहियों में वास करता है।

अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी से आगे

(अध्याय 11 के लिए प्रश्न पृष्ठ 123 पर दिये गये हैं)

1. कलीसिया प्रभु के द्वारा दी गई महान आज्ञा का पूरा होना (मत्ती 28:20) और पृथ्वी पर मसीह की देह है।
2. प्रेरितों 2:1 में सर्वनाम ''वे'' प्रेरितों 1:26 में ''उन ग्यारह प्रेरितों'' की ओर संकेत करता है। बाइबल कहीं पर भी यह संकेत नहीं देती कि पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के अलावा किसी और ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया हो।
3. प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उन्हें परमेश्वर के सन्देश को प्रकट करने के योग्य बनाने के लिए, यह पुष्टि करने के लिए कि वह सन्देश परमेश्वर की ओर से ही था, और अन्य मसीहियों तक चमत्कारी दान पहुंचाने के लिए दिया गया।
4. प्रेरितों का पवित्र आत्मा में बपतिस्मा यह पुष्टि करता है कि नया नियम हमें आत्मा की प्रेरणा पाये हुए लोगों के द्वारा दिया गया।
5. मसीह के परमेश्वर की ओर से होने के फलस्वरूप, पतरस ने उसके आश्चर्यकर्मों, उसके जी उठने, भविष्यवाणी के पूरा होने, गवाहियों के प्रमाण और आत्मा के उतरने के बारे में बताया।
6. छुटकारे की परमेश्वर की योजना के लिए मसीह का जी उठना विशेष महत्व रखता है। यदि वह मुर्दों में से जी न उठता तो मसीह को परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र नहीं माना जाता।
7. पाप में नाश होने से बड़ा कोई दुखांत नहीं है।
8. उद्धार की शर्तों के सम्बन्ध में, मरकुस 16:15,16, विश्वास पर; लूका 24:46,47, मन फिराने और पापों की क्षमा पर; और मत्ती 28:18-20, बपतिस्मे पर जोर देता है।
9. प्रेरितों 22:16, प्रेरितों 2:38 के साथ मिलकर, प्रमाणित करता है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा पाने के लिए है।

नये नियम की कलीसिया

(अध्याय 12 के लिए प्रश्न पृष्ठ 135 पर दिये गये हैं)

1. "प्रेरितों से शिक्षा पाने... में लौलीन रहे" का अर्थ है कि जो उन्हें आत्मा की प्रेरणा पाये प्रेरितों ने सिखाया था, उस पर वे सच्चे मन से चलते रहे। परमेश्वर के वचन के प्रति मसीहियों की ऐसी ही वचनबद्धता होनी चाहिए।
2. यरूशलेम की कलीसिया मन, हृदय और शिक्षा की एकता में भागीदार थी।
3. आज की कलीसिया को तरस के द्वारा चिह्नित परमेश्वर के वचन के प्रति, आज्ञाकार होना चाहिए। हर एक व्यक्ति को जिसने सुसमाचार की आज्ञा मान ली है, मसीह के साथ और कलीसिया के अन्य सभी सदस्यों के साथ एक बनाया गया। मसीही लोग दिल और जान से एक परिवार हैं।
4. यह निर्णय कि नये नियम की कलीसिया कौन सी है परमेश्वर के लिए हमारे दैनिक जीवन, हमारी आत्मिक पहचान, हमारी आराधना, और हमारी आत्मिक सेवा को प्रभावित करेगा।
5. प्रेरितों 2:41-47; 5:11; 7:38; और 8:1, 3 दिखाते हैं कि नये नियम की कलीसिया का आरज़्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ।
6. परमेश्वर के वचन से मुज़्य त्याग दूसरी शताब्दी ईस्वी में आरज़्भ हुए। सातवीं शताब्दी में कैथोलिक कलीसिया के साथ पोप और जटिल पुरोहित-तन्त्र के उदय होने से ये त्याग अपने चरम पर पहुंच गए। अन्य डिनोमिनेशनें सोलहवीं शताब्दी में उत्पन्न होने लगीं।
7. निजी मसीहियों से मसीह की देह बनती है।
8. नये नियम में मिलने वाले नाम के अलावा किसी भी अन्य नाम से नये नियम की कलीसिया की पहचान नहीं होती।
9. हां, आज मसीहियों को नये नियम की कलीसिया की वही रीतियां माननी चाहिए जो परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार स्थापित हुईं।

परमेश्वर के लोगों के लिए विशेष शब्द

(अध्याय 13 के लिए प्रश्न पृष्ठ 147 पर दिये गये हैं)

1. परमेश्वर इस्राएल का राजा था, सरकार का प्रमुज़ और उनके धर्म का प्रमुख। इस्राएल एक "धर्मतन्त्र" (परमेश्वर-शासित देश) था।

2. राजा शाऊल को यहोवा का दास होना था। उसका अधिकार मूसा की व्यवस्था के द्वारा सीमित था।
3. दानिय्येल की भविष्यवाणी के अनुसार, आने वाला राज्य विशेष होना था। एक अनन्त राज्य अन्य सभी राज्यों से हटकर होना था।
4. पवित्र आत्मा की अगुआई से, ''राज्य'' शब्द का स्थान अन्ततः ''कलीसिया'' शब्द ने ले लिया। इस शब्द का प्रयोग दिखाता है कि अपने लोगों के हृदयों पर मसीह की राजकीय भूमिका किस प्रकार कलीसिया को बनाती है।
5. पौलुस परमेश्वर के राज्य में था परन्तु वह स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करने की राह देखता था। सच्चे मसीही अब मसीह के आत्मिक शासन के अधीन हैं, परन्तु वे अनन्तकाल में परमेश्वर, मसीह, और पवित्र आत्मा के साथ भरपूर और निकट सम्बन्ध में प्रवेश करेंगे।
6. नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग 114 बार हुआ है। नये नियम में इस महत्वपूर्ण शब्द के प्रयोग को समझे बिना हम मसीह के उद्धार के मार्ग को नहीं समझ सकते। (देखिए पृष्ठ 253 पर परिशिष्ट 3)।
7. ''कलीसिया'' शब्द का साधारण अर्थ ''सभा'' होता था, जैसे प्रेरितों 19:25 में।
8. नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द का अर्थ हमेशा धार्मिक व ''बुलाई हुई'' सभा ही नहीं है।

कलीसिया के लिए ईश्वरीय पदनाम

(अध्याय 14 के लिए प्रश्न पृष्ठ 160 पर दिये गये हैं)

1. यीशु राजा (सिर) है, और कलीसिया के सदस्य उसके आत्मिक राज्य के नागरिक हैं।
2. मसीह ने कलीसिया की स्थापना की, इसे खरीदा, वह इसका मालिक है, और सिर बनकर इसकी सेवा करता है। कलीसिया को ''परमेश्वर की कलीसिया'' के रूप में भी देखा जा सकता है।
3. कलीसिया को परमेश्वर ने विशेष पदनाम दिये थे। वे एक ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करते हैं, और हमें उनका इस्तेमाल करना चाहिए।
4. जब हम कलीसिया को उसी प्रकार सम्बोधित करते हैं जैसे बाइबल करती है

तो हम अपने आपको वही बनने के लिए सही रास्ते पर ले आते हैं जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता था।

5. मसीही लोग परमेश्वर का परिवार हैं। उनके मनपरिवर्तन के समय, परमेश्वर उन्हें अपनी संतान के रूप में गोद लेकर, उन्हें परिवार के सभी अधिकार देता और मसीह के साथ अनन्त जीवन के वारिस बना लेता है।
6. एक ''मसीही'' मसीह का अनुयायी है जो उसी प्रकार का जीवन जीने का प्रयत्न करता है जिस प्रकार का जीवन जीने की यीशु ने अपने अनुयायियों को शिक्षा दी।
7. पौलुस ने कहा, ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।''
8. मनपरिवर्तन के समय, किसी को परमेश्वर की संतान के रूप में गोद लिया जाता है। उसकी विरासत अनन्त होने के साथ-साथ, परमेश्वर के इस सांसारिक परिवार का समर्थन और शक्ति भी है। परमेश्वर पिता है, यीशु बड़ा भाई है और सभी मसीही लोग मसीह में भाई तथा बहनें हैं।
9. चेला वह है जो अपने आप को अपने से किसी महान के आगे झुका देता है और उस महान से लगातार सीखता रहता है। वह सुनने वाला,सीखने वाला, और अध्ययन करने वाला होता है।
10. ''पवित्र लोग'' परमेश्वर के लिए अलग किये हुए हैं। मसीही बनकर कोई ''पवित्र'' बन जाता/जाती है, अलग हो जाता/जाती है। पवित्र जन को पवित्र बुलाहट से बुलाया गया है, वह पवित्र आचरण में जीवन बिताता/बताती है, और अन्त के दिन परमेश्वर के सामने, ''पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष'' पेश होना चाहता/चाहती है। (देखिए कुलुस्सियों 1:22)।

मसीह, कलीसिया का सिर

(अध्ययन 15 के प्रश्न पृष्ठ 168 पर दिये गये हैं)

1. जो नेतृत्व अगुआई नहीं करता, वह सच्चा नेतृत्व नहीं है।
2. यीशु अपनी व्यवस्था के द्वारा कलीसिया की अगुआई करता है (इफिसियों 1:21, 23; कुलुस्सियों 1:18, 19)।
3. मसीह अन्त समय तक कलीसिया के सिर के रूप में शासन करेगा।

4. यीशु सिद्ध जीवन जी कर और परमेश्वर पिता के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा हमारा सिद्ध उद्धारकर्त्ता बना।
5. हम वही बनते हैं जो हम देखते हैं। मसीही लोग जीवन व्यतीत करने के नमूने के रूप में मसीह के जीवन की ओर देखते हैं। वह अपने सिद्ध जीवन से हमेशा उनकी अगुआई करता है।
6. हमें नम्रता और सेवा में मसीह के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।
7. हर प्रकार से एक दूसरे की सेवा कर मसीही लोग ''एक दूसरे के पांव धोते हैं।''

कलीसिया में प्रवेश करना

(अध्याय 16 के लिए प्रश्न पृष्ठ 175 पर दिये गये हैं)

1. प्रभु की कलीसिया का अमूल्य मोल इसके ईश्वरीय स्त्रोत, इसके बहुमूल्य दाम और इसके महान गुणों में दिखाया गया है।
2. हां, प्रभु द्वारा दी गई आज्ञा की शर्तें आज भी हम पर लागू हैं। ये जगत के अन्त तक प्रभावी रहेंगी (मत्ती 28:18-20)।
3. हमारा उद्धार उस प्रकार नहीं हो सकता जैसे क्रूस पर डाकू का हुआ था क्योंकि वह डाकू व्यवस्था के अधीन मरा था। अब जबकि मसीह हमारे लिए मर गया है, हमारे लिए उसके द्वारा दी गयी आज्ञा को मानना आवश्यक है।
4. आज मसीह की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए, विश्वास करना, मन फिराना, मसीह का अंगीकार करना, और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38, 47)।
5. उद्धार पाए हुओं को प्रभु की कलीसिया में मनुष्य नहीं; केवल परमेश्वर ही मिलाता है।
6. जब कोई मसीही बनने के लिए वही करता है जो लोगों ने प्रेरितों की पुस्तक में किया, तो परमेश्वर उसके लिए भी वही करेगा जो उसने उनके लिए किया जिन्होंने प्रेरितों की पुस्तक में उसकी इच्छा को पूरा किया।
7. मसीही बनने के लिए जो कुछ प्रेरितों 2 में लोगों ने किया, वही करके कोई व्यक्ति सुसमाचार की आज्ञा मान सकता है। वह आश्वस्त हो सकता है कि परमेश्वर के वायदे पक्के हैं।

8. हां, जब उद्धार के लिए प्रभु की शर्तों को विकृत किया जाता है, तो बहुत हानि होती है। इन शर्तों को माने बिना और प्रभु की योजना में इनके महत्व को देखे बिना कोई यीशु की आज्ञा को गम्भीरता से नहीं ले सकता।

कलीसिया की एकता

(अध्याय 17 के लिए प्रश्न पृष्ठ 185 पर दिये गये हैं)

1. कलीसिया की एकता सुखद है क्योंकि यह मसीह में विश्वास बढ़ाती है। यह अच्छी है क्योंकि मसीह ने इसके लिए प्रार्थना की।
2. क्रूसारोहण से पहले, मसीह ने विश्वासियों की एकता के लिए प्रार्थना की।
3. पौलुस ने यीशु मसीह के नाम में एकता का आग्रह किया।
4. मसीही लोग मसीह के साथ और एक दूसरे के साथ, परिवार के सदस्यों की तरह एक हो गये हैं।
5. जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता/लेती है, तो वह अन्य मसीहियों के साथ एक हो जाता/जाती है।
6. कलीसिया शिक्षा और विश्वास में एक है। हर एक को जो मसीह की देह में प्रवेश करता है एकता पवित्र आत्मा के द्वारा दी जाती है, परन्तु उस एकता को बनाए रखने का ढंग हर एक मसीही के लिए बाइबल की शिक्षाओं की आज्ञा मानना है।
7. एकता मसीह की इच्छा के प्रति वचनबद्धता से होती है।
8. बाइबल की आज्ञा को मानने की हर एक मसीही की दिलचस्पी से शिक्षा में एकता आती है, जबकि दैनिक जीवन में एकता एक दूसरे में दिलचस्पी से आती है। कलीसिया को इन दोनों की आवश्यकता है।
9. एकता बनाए रखने के लिए, मसीहियों के लिए आवश्यक है कि वे प्रेम और कृपा से भाइयों तथा बहनों का ध्यान रखें। हर एक को अपने विचारों और इच्छाओं की परवाह न करते हुए, कुछ भी स्वार्थ भावना से नहीं करना चाहिए।

अनन्त पुरस्कार और दण्ड

(अध्याय 18 के लिए प्रश्न पृष्ठ 199 पर दिये गये हैं)

1. परमेश्वर प्रेमी, दयालु, और धैर्यवान तो है, परन्तु वह क्रोध करने वाला और बदला लेने वाला परमेश्वर भी है। परमेश्वर दयालु भी है और कठोर भी है।
2. दुष्टों को अनन्तकाल के लिए बिना खत्म हुए लगातार दण्ड मिलेगा। प्रकाशितवाक्य 14:11 कहता है कि उनकी पीड़ा ''युगानुयुग'' रहेगी।
3. जिन्हें नरक में भेजा जाएगा, वे परमेश्वर से दूर किये जाएंगे, जहां वे शैतान और उसके दूतों के साथ, आग और गन्धक में पीड़ा सहते हुए, बाहर के अंधियारे में, परमेश्वर के बदले का कष्ट भोगेंगे।
4. पौलुस ने उन लोगों का वर्णन कठोर और पश्चात्ताप न करने वाले हृदय के लोगों के रूप में किया, जो परमेश्वर को नहीं जानते, और सच्चाई को नहीं मानते।
5. हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य स्वर्ग में पहुंचना और नरक के ख़ौफ़ से बचना होना चाहिए।
6. जो लोग पुराने नियम के अधीन थे, उन्हें लम्बे जीवन और समृद्धि के साथ कनान की धरती का वायदा दिया गया था। मसीहियों को सदा तक रहने के लिए एक स्थान देने का वायदा दिया गया है।
7. ''स्वर्ग'' शब्द तीन विभिन्न क्षेत्रों को सम्बोधित करने के लिए किया जाता है: (1) आकाश जहां बादल हैं और पक्षी उड़ते हैं, (2) तारों और नक्षत्रों से भरा हुआ संसार, और (3) परमेश्वर का निवास स्थान।
8. वहां सूर्य, चांद, या कोई दीपक (रोशनी) नहीं होगा क्योंकि परमेश्वर ही हमारा प्रकाश होगा। हमें भौतिक भोजन की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि जीवन के पेड़ तक हमारी पहुंच होगी।
9. जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, वे स्वर्ग में जाएंगे।

मन फिराव

(अध्याय 19 के लिए प्रश्न पृष्ठ 210 पर दिये गये हैं)

1. मृत्यु के पश्चात, धनी आदमी की प्राथमिकताएं बदल गईं। उसे अपनी आत्मा की स्थिति और अपने भाइयों की आत्मिक स्थिति की चिन्ता होने लगी।

2. ''मन फिराव'' एक आधारभूत शब्द है क्योंकि केवल वही लोग मसीही बन सकते हैं जिन्होंने मन फिरा लिया है। वास्तव में, सच्चे मन फिराव से ही अनन्त जीवन का द्वार खुलता है।
3. यहूदा का पछतावा (मत्ती 27:3) दिखाता है कि मन फिराना मात्र पछतावे से अधिक है। यहूदा पछताया कि उसने यीशु को पकड़वाया था, परन्तु उसने मन नहीं फिराया।
4. परमेश्वर भक्ति का शोक पहले होता है और यह मन फिराव को जन्म देता है। परमेश्वर भक्ति का शोक प्रक्रिया का एक भाग है, परन्तु यह अपने आप में मन फिराना नहीं है।
5. शाऊल ने इच्छा को दृढ़ता से बदला जिससे उसका मन फिराव स्पष्ट दिखाई दिया। उसने मसीह की कलीसिया को सताना बन्द करके और अपना पूरा जीवन यीशु को समर्पित कर दिया।
6. पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की प्रशंसा की क्योंकि वे अपने मन फिराने में ''मूर्तों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा'' करें (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)। उन्होंने दिखाया कि मन फिराना केवल पाप से मुड़ना ही नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर मुड़ना भी है।
7. मन फिराना मात्र पापों के अंगीकार से अधिक है क्योंकि पाप से मुड़कर मसीह की ओर मुड़ना भी आवश्यक है। कई लोग सोचते हैं कि किसी व्यक्ति के सामने अपने पापों का अंगीकार करना मन फिराना ही है। अपने पापों को स्वीकार करना आवश्यक है (याकूब 5:16), परन्तु पापमय जीवन को छोड़ना भी आवश्यक है।
8. परमेश्वर की भलाई, पुरस्कार का वायदा और दण्ड का भय पवित्र शास्त्र के अनुसार मन फिराने के लिए तीन प्रेरक हैं।

आप यीशु के साथ क्या करेंगे?

(अध्याय 20 के लिए प्रश्न पृष्ठ 228 पर दिये गये हैं)

1. स्वर्ग के लिए मार्ग केवल यीशु ही है, इसलिए उसे दिया हुआ हमारा उत्तर तय करेगा कि हम अनन्तकाल का समय कहां बिताएंगे।
2. शिशुओं और छोटे बालकों को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं क्योंकि

उन्हें यह समझ नहीं कि पाप क्या है।

3. बपतिस्मा पापों की क्षमा, अर्थात माफ़ी के लिए है।
4. नये नियम की कलीसिया को पहचानने के लिए, यह पूछिये ''क्या वे नये नियम की कलीसिया बनने का प्रयत्न कर रहे हैं?''; ''क्या वे हर रविवार प्रभु भोज में भाग लेते हैं?''; ''क्या वे साज़ों के बिना गाते हैं?''; ''क्या वे यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं?''; ''क्या वे हर रविवार अपनी आमदनी में से देते हैं?''; ''वे संगठित कैसे हैं?''; ''क्या पृथ्वी पर उनका कोई मुज़्यालय है?''; ''उनका मिशन क्या है?''
5. रोमियों 6:4 सिखाती है कि बपतिस्मा पानी में गाड़े जाना है।
6. एक मसीही के जीवन को संक्षेप में बताने का अच्छा ढंग यह कहना है कि उसने मसीह में बपतिस्मा लिया है और वह मसीह का अनुयायी है।
7. एक मसीही परमेश्वर के वचन के निकट रहता है ताकि वह परमेश्वर के प्रति मसीह की सच्ची आज्ञाकारिता का अनुसरण कर सके।
8. हर रविवार, अर्थात प्रभु के दिन, मसीही लोग गा कर, प्रार्थना करके, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करके, प्रभु भोज में भाग लेकर, और अपने धन में से देकर परमेश्वर की आराधना इकट्ठे होकर करते हैं।
9. प्रभु भोज में, यीशु ने अखमीरी रोटी और दाख के रस अर्थात अंगूर के रस का इस्तेमाल किया।
10. एक मसीही बनने और मसीही बनकर जीने के लिए आपको चाहिए कि (1) मसीह के पास आएं, (2) उसके साथ जीवन आरज़्भ करें, (3)लगातार अन्य मसीहियों के साथ आराधना करें, और (4) दूसरों की सेवा करना आरज़्भ कर दें।